युवा जीवन

अप्रैल 2022

यीशु खोज

छुटकारा

प्राक्कथन

मेरे प्रियों, मैं आप में से प्रत्येक को अपना प्यार व शुभकामनाएं देता हूं!

लगभग 400 साल पहले, गुलामी नामक एक सामाजिक बुराई संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रचलित थी। इस गंभीर सामाजिक बुराई को मिटाने के लिए अब्राहम लिंकन ने बहुत संघर्ष किया था। यह वह समय था जब इस स्थान को उत्तरी व दक्षिणी प्रांत के रूप में विभाजित था। सन् 1862 में एक बार शपथ लेने के पश्चात उन्होंने घोषणा की कि दो साल में सभी गुलाम आज़ाद हो जाएंगे और अमेरिका में इसके बाद कोई गुलामी नहीं होनी चाहिए।

वर्ष 1863 में, जनवरी के पहले दिन, अब्राहम लिंकन ने गुलामों को स्थायी रूप से आज़ाद करने के लिए संघ में एक आज़ादी उद्घोषणा जारी कर दी। इस कारण से इस उद्घोषणा को खारिज करने वाले 11 दक्षिणी राज्यों तथा इसका स्वागत करने वाले उत्तरी राज्यों के बीच एक तकरार शुरू हो गई। फिर भी, अब्राहम लिंकन ने सब बातों से निपटते हुए गुलामी को पूरी तरह से समाप्त किया।

उसी प्रकार, हमें पाप की गुलामी से छुड़ाने के लिए तथा मनुष्य जाति को बचाने व छुड़ाने के लिए, जो हर तरह के श्रापों में फंसी है, प्रभु यीशु ने स्वर्ग सिंहासन को छोड़ दिया और एक साधारण मनुष्य का रूप धारण कर पृथ्वी पर आए। वे जहाँ भी गए, उन्होंने भलाई की, लोगों को सिखाया, अद्भुत काम किए, लोगों के आंसू पोंछे और उन्हें अंधकार से ज्योति में ले आए। उन्होंने मनुष्य जाति को छुड़ाने के लिए खुद को एक पापबलि के रूप में दे दिया। वे मरे, तीसरे दिन मुर्दों में से जी उठे, और अब स्वर्ग में स्वर्गीय पिता के दाहिने हाथ बैठे हैं और आज भी हमारे लिए मध्यस्थी कर रहे हैं।

जिस परमेश्वर ने आपको व मुझे बचाया उनकी असीम धड़कन इस बोझ से धड़कती है कि मेरे लोगों ने मुझे, सबके सृष्टिकर्ता को, अभी तक नहीं जाना है।

मैं, यीशु, अपने लोगों का हृदय खोलने के लिए तैयार हूं।

लेकिन एक युवा होते हुए जिन्हें मेरा प्रेम बांटना चाहिए, आप मेरे भाई, मेरी बहन आप क्या कर रहे हैं?

जैसे बंधुआ मजदूरी हमारे देश से धीरे-धीरे समाप्त हो रही है, पाप की गुलामी बढ़ रही है। इसका क्या कारण है? इस जगत में बहुत सी आत्माएं नाश हो रही हैं, लेकिन उन पर तरस खाने वाला कौन है?

युवाओं उठो

और कार्य करो, उस उद्धारकर्ता के बोझ को समझते हुए जिसने आपको छुड़ाया है।

जी उठने के इस महीने में,

क्या आप हमारे उद्धारक के अपरिवर्तनीय प्रेम को साझा करेंगे।

मसीह के कार्य में,

अविनाश

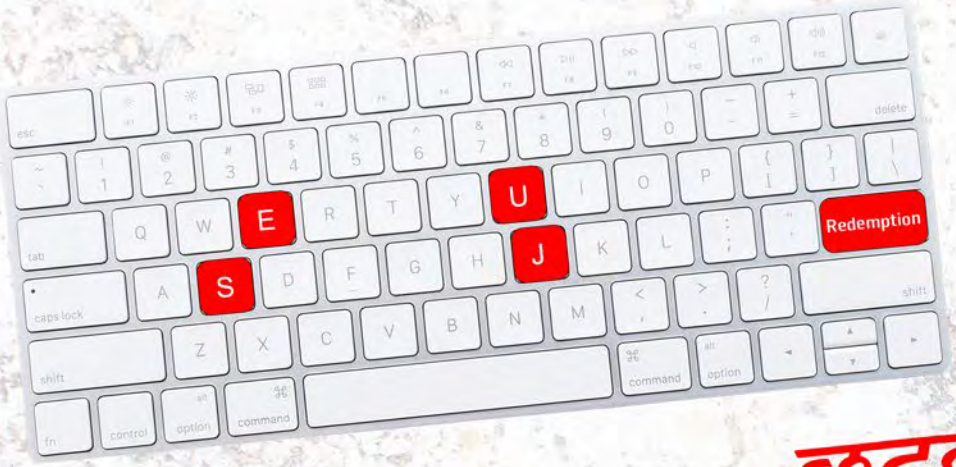

छुटकारा

नौजवान बाबू केरल के पलक्कड़ जिले में मालापुझा की पहाड़ियों पर चढ़ रहा था, उसे उस खतरे का एहसास नहीं था जो उसका इंतजार कर रहा था। इस प्रयास के दौरान, वह फिसल गया और पहाड़ियों के बीच एक गड्ढे में गिर गया। उसके असहाय मित्र इधर-उधर भागे और बाबू को बचाने के लिए पौधे, लता व रस्सियों को पकड़ लिया, लेकिन उनकी सारी कोशिशें बेकार गईं। उन्होंने पुलिस और पहाड़ की तलहटी के पास के गांव को सूचना दी। हालाँकि उन्होंने बहुत कोशिश की, वे प्रकाश की कमी के कारण खोज जारी नहीं रख पाए, बाबू भोजन व पानी के बिना 40 घंटे तक तड़पता रहा। अंत में, नीलगिरी जिले के वेलिंगटन से और बैंगलोर से थल सेना को लाया गया और वायु सेना को कोयंबटूर से लाया गया। दोनों ने मिलकर बाबू को छुड़ाया।

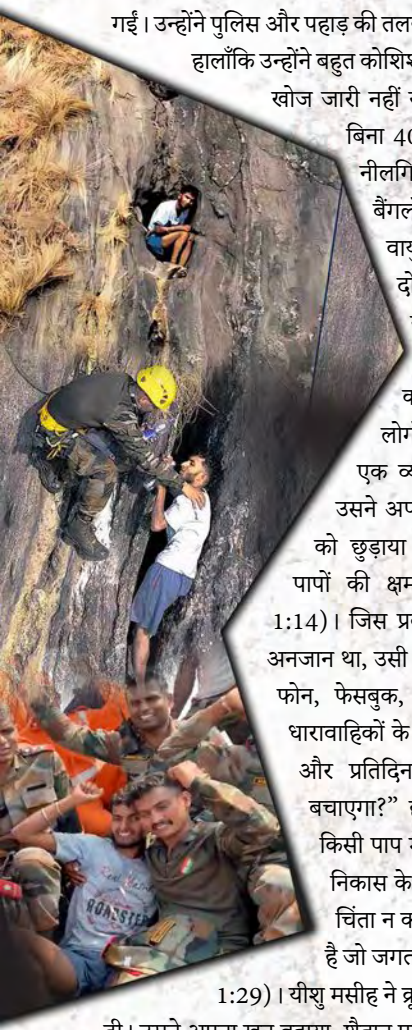

राष्ट्रीय सेना और लोगों को मात्र एक व्यक्ति को बचाने के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ा। लेकिन सब लोगों को पाप से बचाने के लिए मात्र एक व्यक्ति स्वर्ग से धरती पर आया। उसने अपना जीवन त्याग दिया और लोगों को छुड़ाया। "जिसमें हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है" (कुलुस्सियों 1:14)। जिस प्रकार बाबू अपने खतरे के बारे में अनजान था, उसी तरह बहुत से युवा अपने मोबाइल फोन, फेसबुक, गेम, नशे, सिनेमा, एवं टी.वी धारावाहिकों के आदी बनने के पाप में गिर रहे हैं और प्रतिदिन परेशान होते हैं, "मुझे कौन बचाएगा?" हो सकता है आप भी इन में से किसी पाप में फँसे हों, और बहुत वर्षों से एक निकास के लिए व्यर्थ ही प्रतीक्षा कर रहे हैं। चिंता न करें! "देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है" (यूहन्ना 1:29)। यीशु मसीह ने क्रूस पर आपके लिए अपनी जान दे दी। उसने अपना खून बहाया, शैतान पर विजय प्राप्त की तथा तीसरे दिन फिर से जी उठा। यदि आप विश्वास करें कि जी उठा मसीह आपके सभी पापों को धो सकता है और उसे निहारें, तो आप आज़ाद हो जाएंगे। "मैंने तेरे अपराधों को काली घटा के समान और तेरे पापों को बादल के समान मिटा दिया है; मेरी ओर फिर लौट आ, क्योंकि मैंने तुझे छुड़ा लिया है" (यशायाह 44:22)। यह मत भूलें कि यीशु के बिना कोई छुटकारा या उद्धार नहीं है। यह सोचना वाकई हैरान कर देने वाला है कि हमें मसीह के माध्यम से किस प्रकार का छुटकारा मिला है।

एक गुलाम खुद को आज़ाद नहीं कर सकता। इसी तरह, हम भी पाप के बंधन से खुद को बचाने में असमर्थ थे। परन्तु परमेश्वर दया करके हमें ढूंढ़ता हुआ आया और हमें छुड़ा लिया। मसीह के द्वारा उद्धार पाने के बाद आप क्या कर रहे हैं? क्या आपने कभी इस बारे में सोचा है? अपने इर्द-गिर्द लोगों पर एक नज़र डालें! रोज़ाना आप अपने आस-पास लोगों को पापों के बंधनों में जाता, छुटकारे के लिए एक उद्धारकर्ता की कामना करता देख साक्षी बनते हैं।

यदि आपने उनसे उस मसीह के बारे में बताया होता जिसने आपको छुड़ाया है, तो मैं उसके लिए परमेश्वर की स्तुति करता। यदि नहीं, तो यह तुरंत करना शुरू करें! मसीह को स्वीकार करने के पश्चात, और पौलुस में बदलने के बाद, शाऊल, "और वह तुरन्त आराधनालयों में यीशु का प्रचार करने लगा, कि वह परमेश्वर का पुत्र है" (प्रेरितों के काम 9:20)। लेकिन छुटकारा पाने के कई वर्षों पश्चात भी सुसमाचार सुनाने में देरी करने के पीछे आपका क्या उद्देश्य है?

मेरे प्रिय भाई व बहनों! प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर आए, "जैसे कि मनुष्य का पुत्र, वह इसलिए नहीं आया कि अपनी सेवा करवाए, परन्तु इसलिए आया कि सेवा करे और बहुतों के छुटकारे के लिये अपने प्राण दे" (मत्ती 20:28)। मैं आपको एक पूर्णकालिक सेवकाई करने के लिए नहीं कह रहा। यदि आपके पास पूर्णकालिक सेवकाई करने की बुलाहट है, आप निश्चित रूप से इसे कर सकते हैं। वरना, आप जहां-कहीं भी हों आप सुसमाचार बाँट सकते हैं जैसे स्कूलों, कॉलजों या दफतरों में, और आप लोगों को पाप के बंधन से छुड़ा सकते हैं। मैं आपको फिर से याद दिलाना चाहता हूँ कि 'खेत तो पक्के हैं लेकिन मजदूर थोड़े हैं!' शीघ्र इस कार्य में शामिल हों और सुसमाचार फैलाएं! जी उठा प्रभु यीशु मसीह सच में जीवित है। मेरा आग्रह है कि आप यह बातें सुनने के बाद सुसमाचार में देरी न करें।

बहन. प्रिया

मेरे विचार नहीं... लेकिन मेरे प्रभु के विचार महान हैं!

एक बहन, जो एक मसीही परिवार में पैदा हुई थी, लेकिन एक ऐसा जीवन जी रही थी जो प्रभु को प्रसन्न नहीं कर रहा था, उसे 8वीं कक्षा में वी.बी.एस. के माध्यम से प्रभु ने अलग किया और आज वह जोश से प्रभु की सेवा कर रही है। वह हमसे मसीह को स्वीकार करने के बाद उनके जीवन में हुए परिवर्तनों के बारे में साझा करने जा रही है।

क्या आप हमें अपने परिवार के बारे में बता सकते हैं?

मेरा जन्म कोविलपट्टी, थूथुकुडी जिले में एक मसीही परिवार में, श्री चेल्लाथुरई व उनकी पत्नी ग्रेस जूलिया दंपति की सबसे बड़ी बेटी के रूप में हुआ था। मेरी एक छोटी बहन है। मेरे पिता एक कपास मिल में काम करते हैं और मेरी माँ एक गृहिणी हैं जो हमारी देखभाल करती हैं। यह मेरा एक सुंदर परिवार है।

अपने बचपन के दिनों के बारे में बताएं?...

चूंकि मेरा परिवार एक मसीही परिवार है, मसीही धर्म मेरे लिए कोई नया नहीं था। हालांकि मैं एक मसीही परिवार में जन्मी थी, मुझे गीत गाना पसंद नहीं था। लेकिन मेरी माँ प्रत्येक नव वर्ष में कलीसिया में होती आराधना सभाओं तथा कार्यक्रम में मुझे जबरदस्ती भेजा करती थी। मैं उनके दबाव में ही बाइबल के वचनों को याद करती और गीत गाया करती थी। मेरे व्यक्तिगत जीवन में जब मैं चौथी और पाँचवी कक्षा में थी, मैं फिल्में देखा करती थी और फिल्मी गीत सुनती थी और अपनी सहेलियों के संग उन्हीं गीतों को गाती थी। मेरी सोच में मेरा एक ही विचार होता था कि कोई परमेश्वर नहीं है।

ठीक है... आप दबाव में आकर चर्च जाती थी। तो आपका उद्धार कैसे हुआ?

मैं एक अच्छी पढ़ने वाली विद्यार्थी थी। यदि मैं अच्छी पढ़ाई न करती या कम अंक लेकर आती तो मेरी माँ मेरी पिटाई करती थी। मैं उस डर से अच्छी पढ़ाई करती थी। बिना किसी की जानकारी के मैं बहुत शरारतें किया करती थी। एक तरफ तो मैं दूसरे विद्यार्थियों से मूकाबला करती और अच्छा पढ़ाई करती थी लेकिन दूसरी ओर मेरे जीवन में शांति नहीं थी। मैंने बहुत से फिल्मी गीतों को गाना शुरु कर दिया। जब मेरा जीवन इस दिनचर्या में था, मैं अपनी 8वीं कक्षा में चर्च में वी. बी.एस. में शामिल हुई। वहां प्रभु एक दर्शन में मुझे दिखाई दिए और उन्होंने मुझे छुआ। उस दिन मैंने अपना जीवन पूरी तरह से परमेश्वर को सौंप दिया। प्रभु यीशु मेरे जीवन में आए। मेरी पढ़ाई और बेहतर होने लगी।

बढ़िया! जब आप 8वीं कक्षा में थी तब आपने मसीह को स्वीकार किया। तो, उद्धार पाने के पश्चात आपके जीवन में क्या परिवर्तन आए?

स्वयं को मसीह यीशु को समर्पित करने के बाद, मैं उत्सुकता से चर्च जाने लगी। पढ़ाई करने से पहले मैं बैठकर प्रार्थना करने व बाइबल से पढ़ने लगी। मैं प्रार्थना का समय रखने लगी। जब मैंने प्रार्थना की यह आदत शुरु की तब मैं अपनी 12वीं कक्षा में थी और मैं इस आदत में अभी भी हूं। परमेश्वर ने मुझे वह प्रार्थना समय निरंतर रखने के लिए अनुग्रह दिया। आप भी इसका प्रयास कर सकते हैं। परमेश्वर आपको भी आपकी पढ़ाई में बढ़ाएंगे।

ठीक है... उद्धार पाने के पश्चात आपके जीवन में क्या हुआ?

उसी वर्ष जब मैं 8वीं कक्षा में थी और जब मैंने समझा कि यीशु ही सच्चे परमेश्वर हैं और जब मैंने उन्हें अपने व्यक्तिगत मुक्तिदाता के रूप में स्वीकार कर लिया, तो मेरी माँ गर्भवती हो गई और उसने मेरी छोटी बहन प्रिसिल्ला ब्लैसी को जन्म दिया। हम सब बहुत खुश थे। लेकिन यह खुशी ज्यादा देर तक नहीं रही। जब वह ढाई वर्ष की हुई, जब मैं अपनी 10वीं कक्षा में थी, तो उसे ब्लड कैंसर की बीमारी पाई गई। कई उपचार

दिए जाने के बावजूद हम उसे बचा नहीं पाए। जब मैं 10वीं कक्षा में थी, तब वह गुजर गई। मैंने एक अच्छी डॉक्टर बनने की ख्वाहिश के साथ अपनी 10वीं कक्षा में कठिन अध्ययन करना शुरू कर दिया। लेकिन, मेरी बहन की बीमारी के कारण हमने सारे गहने, पैसे, कार बेच दी और उसका इलाज करवाया। इस स्थिति ने मेरी पढ़ाई को प्रभावित किया। मैं अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सकी क्योंकि मेरे पिता, माँ और दूसरी बहन की यादें अक्सर आती थीं और मेरी पहली बहन मेरी दादी के घर रहती थी और वहीं पढ़ाई करती थी। तब मैं केवल प्रार्थना करना और बाइबल पढ़ना ही जानती थी। उस समय मेरे पिता यीशु मसीह मेरे अच्छे दोस्त, पिता, मां और मेरी आशा थे। मैं उन्हें सब कुछ बता देती और रो देती। मैंने देखा कि वह मेरे साथी हैं और मेरी पढ़ाई में मेरी मदद करते हैं। मुझे यह बताने दें कि वे किस प्रकार मेरी मदद करते थे। 10वीं कक्षा की पुनरीक्षण परीक्षा में बैठने वाले सभी लोगों की तरह, मैंने भी अपनी परीक्षा दी। मैंने अपने पहले पुनरीक्षण में 240/500 अंक प्राप्त किए। अपने दूसरे पुनरीक्षण में मैंने 414/500 अंक प्राप्त किए। मुझे अपने घर में एक C.D. मिली, जहां मोहन अंकल ने परीक्षा देने वाले छात्रों के लिए परमेश्वर के वचन साझा किए। उनके माध्यम से परमेश्वर ने मुझसे ये वचन कहे, "युद्ध के दिन के लिये घोड़ा तैयार तो होता है, परन्तु जय यहोवा ही से मिलती है" (नीतिवचन 21:31)। मेरी बोर्ड परीक्षा में जाने से पहले परमेश्वर ने मुझे बाइबल के इस वचन से मज़बूत किया, "मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ" (यशायाह 41:10)। इस प्रकार, परमेश्वर की कृपा से, मैंने अपनी परीक्षा में 452/500 अंक प्राप्त किए और गणित में 99/100 अंक प्राप्त किए। उन्होंने मेरी उच्च माध्यमिक में गणित व जीवविज्ञान वर्ग को पाने और मेरी पढ़ाई को आगे बढ़ाने में मेरी मदद की।

बढ़िया... आपने अपनी उच्च माध्यमिक में एक अच्छा वर्ग चुना। आपने अपनी स्कूली शिक्षा कैसे पूरी की?

मैंने 11वीं कक्षा में अच्छी पढ़ाई की। 12वीं कक्षा में मैं पी.सी.ओ.डी. (पॉली सिस्टिक ओवेरियन डिजीज) की वजह से बहुत पीड़ित थी। जब मैं 9.30 बजे अपनी बोर्ड परीक्षा लिखने के लिए परीक्षा हॉल में जाने वाली थी, सुबह 8 बजे मैं इस बीमारी से प्रभावित हो गई, उसके कारण मुझमें खून की कमी हो गई। मैं अपनी परीक्षा ठीक से नहीं लिख पा रही थी। मेरे पिता और माँ ने मुझे जितना हो सके लिखने के लिए कहा और मुझे परीक्षा के लिए भेजा। लेकिन मेरी महत्वाकांक्षा डॉक्टर बनने की थी। अंत में, मैंने अपनी 12वीं कक्षा में सफलतापूर्वक 847/1200 अंक प्राप्त किए। मेरी कक्षा में मुझसे खराब पढ़ने वालों ने भी बोर्ड परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त किए। मैं यह कहते हुए बहुत रोयी, "यीशु क्यों? मैंने तो अच्छी प्रार्थना की थी और आपके लिए जी रही थी। मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ?" और उनसे कई सवाल किए। लेकिन उस वक्त मुझे कोई जवाब नहीं मिला।

आप डॉक्टर बनने के अपने सपने को पूरा करने में असमर्थ थीं। तो आपने आगे क्या पढ़ाई की?

मेरा सपना उस समय पूरा नहीं हुआ था। लेकिन परमेश्वर ने मुझे नहीं छोड़ा। हमारे पारिवारिक डॉक्टर, डॉ. चिन्नासामी प्रभारन, कोविलपट्टी ने के.आर. कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस के प्रिंसिपल से बात करके मेरी बहुत मदद की और मुझे उस कॉलेज में बी.एस.सी. केमिस्ट्री में शामिल करवाया। मुझे मेरे कॉलेज में सब कुछ अंग्रेजी में सीखना था। अंग्रेजी मेरे लिए कठिन थी। इसलिए, मैंने अपने पिता परमेश्वर यीशु से प्रार्थना की। उन्होंने मुझे अच्छे दोस्त दिए। उनमें से मेरी जेमिमा प्रिंसली नामक एक सहेली थी जिसने मेरी मदद की और मुझे अंग्रेजी सिखाई। परमेश्वर ने मुझे मेरे कॉलेज में होने वाले उन आयोजनों और खेलों में बढ़ाया, जिनमें मैंने भाग लिया था। जब मैंने बी.एस.सी. पूरी की, तो परमेश्वर ने मुझे मेरे कॉलेज में तीसरे स्थान पर सर्वाधिक अंक देकर ऊँचा उठाया। मैं कहूंगी, ये सब यीशु के कारण हो पाया जो मेरे साथ थे और जिन्होंने मुझसे प्रार्थना करवाई।

बहुत अच्छा! यीशु का साथ पा कर और उनकी मदद से आप अपना कॉलेज पूरा करने में सक्षम थी। क्या आपने कोई उच्च पढ़ाई की?

दरअसल, मुझे नहीं पता था कि आगे क्या करना है। केवल एक बात जो मैं जानती थी वह थी प्रार्थना करना। जब मैंने यीशु से पूछा कि मुझे आगे क्या करना चाहिए, तो उन्होंने मुझे यह वचन दिया, "मैं आज ही बताता हूँ कि मैं तुम को बदले में दुगना सुख दूँगा" (जकर्याह 9:12)। मुझे उस आयत पर पूरी तरह से विश्वास था। उस समय हमारे कॉलेज की प्राध्यापक श्रीमती भुवनेश्वरी, जिन्होंने हमारी बहुत मदद की, ने मुझे और मेरी सहेलियों को मद्रास विश्वविद्यालय के लिए आवेदन करने और प्रवेश परीक्षा के लिए तैयार होने के लिए कहा। उसने कहा कि यदि परमेश्वर ने चाहा तो आपको वहां सीटें मिल जाएंगी।

जब मैंने अपने पिता से यह कहा, तो उन्होंने कहा, "अपना सर्वश्रेष्ठ करो, लेकिन मेरे पास इतना पैसा नहीं है कि मैं तुम्हारी उच्च शिक्षा को आगे बढ़ा सकूं।" मैं यीशु से प्रतिदिन प्रार्थना करने लगी। न केवल मैंने प्रार्थना की, हालांकि सेमेस्टर परीक्षा के बाद सभी घर चले गए, लेकिन मैंने अपने दो अन्य सहेलियों के साथ नोट्स बनाना शुरू किया और प्रवेश परीक्षा के लिए कई किताबों से सीखना शुरू किया। भले ही हम अपने-

अपने घरों में चले जाएंगे, हम फोन के ज़रिए अपनी शंकाओं का समाधान ढूंढते थे। हम तीनों में से हमारी एक सहेली हिंदू परिवार से है। लेकिन जब भी हम प्रार्थना करते, वह हमारे साथ प्रार्थना में शामिल होती। यह मेरे लिए आश्चर्य की बात थी। हम तीनों अपनी प्रवेश परीक्षा लिखने के लिए चेन्नई चली गईं। जैसा कि परमेश्वर ने कहा, उन्होंने मुझे उस कॉलेज में दो वर्ग दिए। एक है एम.एस.सी. मेडिकल बायोकैमिस्ट्री और दूसरा है एम.एस.सी. बायोमेडिकल जेनेटिक्स। अब समस्या दोनों में से किसी एक को चुनने का आई। परमेश्वर के मार्गदर्शन से मैंने एम.एस.सी मेडिकल बायोकैमिस्ट्री को चुना और इसका ही अध्ययन किया। चूंकि यह एक राज्य सरकार का विश्वविद्यालय है, इसलिए उन्होंने स्वयं मेरी शिक्षा के लिए 8000 रुपये का भुगतान किया। परमेश्वर ने मेरी उच्च शिक्षा के लिए और अधिक खर्च नहीं होने दिया।

वहाँ के प्रोफेसर की आँखों में परमेश्वर की कृपा से मैं "गैस्ट्रिक कैंसर" पर अपना प्रोजेक्ट पूरा करने में सक्षम हुई। मैंने सिर्फ एक डॉक्टर बनने की सोची थी। लेकिन परमेश्वर ने मुझे एक चिकित्सक शोधकर्ता तक ऊँचा उठाया। परमेश्वर ने मुझे उस स्तर तक उठाया जिसकी मैंने कल्पना भी न की थी। मैं चकित हो गई कि यह वचन कितना सच है, "मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं है, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है" (यशायाह 55:8)।

आप युवाओं को क्या बताना पसंद करती हैं?

अपना जीवन व शिक्षा परमेश्वर को समर्पित कर दें। परमेश्वर आपको इतनी ऊंचाइयों पर पहुंचाएंगे जिसकी आपने कभी कल्पना भी नहीं की होगी। जब आप परमेश्वर की इच्छा के सामने आत्मसमर्पण करेंगे, तो वह भी आपको ऊँचा उठाएंगे। जब आप असफलताओं का सामना करते हैं और उदास महसूस करते हैं तो उन्हें न छोड़ें, बल्कि उन पर निर्भर रहें। परमेश्वर आपके जीवन में भी चमत्कार करेंगे।

मेरे प्रिय युवाओं! अपने जीवन में कितने भी संघर्ष और तूफान के बावजूद प्रभु को छोड़े बिना, प्रभु के प्रति उनकी प्रतिबद्धता, उनकी आज्ञाकारिता और परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण के कारण, आज, बहन प्रिया का जीवन उनकी कल्पना से परे आशीषित बन गया है। आज अपने आप को यीशु के प्रति समर्पित कर दें! आपको बड़ी आशीषें प्राप्त होंगी!

नया जन्म पाए मसीही के लक्षण

- वे हर समय सच बोलते हैं
- वे अच्छे श्रोता हैं
- वे शायद ही कभी रुठते हैं
- वे जल्द माफ कर देते हैं
- वे विश्वसनीय हैं
- वे सहायक हैं
- उन्हें प्रार्थना व उपवास की भूख होती है
- वे परमेश्वर के वचन पर भरोसा करते हैं
- जितना अधिक परमेश्वर उन्हें ऊपर उठाता है, उतना ही वे विनम्र होते जाते हैं
- वे शायद ही अपना बचाव करते हैं
- वे पश्चाताप करने में जल्दी करती हैं
- वे शांति चाहते हैं और उसका पीछा करते हैं
- वे लोगों से प्यार करते हैं और वे दयालु हैं
- वे जानते हैं कि कब बात करनी है और कब चुप रहना है
- वे जीवन के कई पहलुओं में ज्ञान से भरे हुए हैं
- वे लोगों का सम्मान करते हैं और लोगों की भावनाओं के प्रति बहुत संवेदनशील होते हैं
- उनमें बहुत धैर्य होता है और वे क्रोधी नहीं होते
- वे परमेश्वर से डरते हैं
- वे आदर देना हो वहां वे आदर देते हैं
- उनके पास जो है वे उसी में संतुष्ट रहते हैं
- उनके पास अच्छा नेतृत्व कौशल है
- वे मेहमाननवाज हैं
- वे सभी प्रकार की शिक्षाओं से प्रभावित नहीं होते हैं
- वे अच्छे अनुयायी हैं
- उनमें त्याग की भावना है
- वे गपशप नहीं करते और लोगों को नीचा नहीं देखते हैं
- उन्हें विश्वास है
- वे चर्च की गतिविधियों में भाग लेते हैं और नियमित रूप से चर्च जाते हैं
- वे जीवन के हर पहलू में निर्मल रहते हैं
- उनकी आत्मा संवेदनशील है, वे पाप से घृणा करते हैं
- वे दूसरों की तुलना में खुद को पवित्र नहीं दिखाते हैं
- वे दूसरों के साथ मुकाबला नहीं करते हैं

अपने आपको परखो, कि विश्वास में हो कि नहीं; अपने आपको जाँचो, क्या तुम अपने विषय में यह नहीं जानते, कि यीशु मसीह तुम में है? नहीं तो तुम निकम्मे निकले हो?" 2कुरिन्थियों 13:5

प्रिय युवाओं आएं हम यह देखने के लिए स्वयं की जांच करें कि क्या हम विश्वास के मार्ग में हैं। आएं हम परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह हमें अपने कमजोर क्षेत्रों की पहचान करने तथा उन पर काम करने के लिए अनुग्रह प्रदान करें और मसीह को महिमा देते हुए एक गवाह का जीवन जीएं।

असफलता को पराजय किया जा सकता है

भविष्य के उन उपलब्धि प्राप्तकर्ताओं को बधाई जो एक साहसिक यात्रा करने के लिए अपने सुंदर पंखों को फैलाकर हर दिन तैयार हो रहे हैं। आशा है कि जिस उपलब्धि प्राप्तकर्ता का जीवन हम आज देखने जा रहे हैं, वह आपको ऊंची उड़ान भरने में मदद करेगा।

कैलिफ़ोर्निया में पैदा हुए रिचर्ड मंटानेज़ अपने माता-पिता व दस भाई-बहनों के साथ एक बेडरूम वाले मकान में रहते थे। उनके माता-पिता अपनी जीविका के लिए अंगूर बेचा करते थे। हालांकि यह कमाई उनके गुजारे के लिए पर्याप्त नहीं थी। रिचर्ड ने अपने दम पर कभी कुछ नया नहीं खरीदा। उन्हें हमेशा ऐसी चीजें मिलती थीं जो पहले से ही किसी के द्वारा इस्तेमाल करके छोड़ी जा चुकी थीं। उनके स्कूल में सभी छात्र अंग्रेजी बोलते हैं, लेकिन रिचर्ड अंग्रेजी बोलने में अच्छे नहीं थे। क्योंकि उनके दोस्तों ने उसे चिढ़ाया करते थे, वह अपनी तीसरी कक्षा से स्कूल न जाने के लिए अड़ गए और आख़िरकार चौथी कक्षा में स्कूल छोड़ दिया।

वह बिना हार माने अपनी रोज़ी-रोटी के लिए कई तरह के काम करते थे जैसे कि झुलसा देने वाली धूप में इधर-उधर जाना, मुर्गीपालन, कार धोना। किए जा रहे सब कामों के बावजूद, उनकी गरीबी दूर नहीं हुई। जब वे एक बेहतर नौकरी ढूँढ रहे थे, उन्हें अपने एक मित्र के ज़रीए एक कंपनी में फर्श की सफाई करने का काम मिला। उन नौकरी के लिए आवेदन भेजने के लिए उन्होंने अपनी पत्नी की सहायता से आवेदन फार्म को भरा। उस दिन उन्हें अपने स्कूल छोड़ने का अफसोस हुआ। उन्होंने 18 वर्ष की आयु में उस कंपनी में फर्श साफ करने का काम ले लिया। अकसर वह थोड़ा बहुत सफाई करने के विचार की बजाय फर्श को बेदाग दिखने तक साफ करते थे। फ्रिटो-ले कंपनी जहां रिचर्ड काम करते थे, वह घाटे में जाने लगी।

इस समय में, फ्रिटो-ले कंपनी के मालिक से एक घोषणा आई जिसमें कहा गया कि जो कोई इस कंपनी के लिए काम कर रहा है उसे खुद को कंपनी का मालिक समझते हुए इसके लिए काम करना होगा। जिस किसी ने इस खबर को सुना उसने इस पर ध्यान नहीं दिया। लेकिन रिचर्ड ने जो 10 वर्षों से फर्श साफ करता था, खुद को कंपनी का मालिक समझते हुए सफलता की ओर एक कदम बढ़ाया। उन्होंने बिक्री मैनेजर से कहा कि वह बिना भूले उन्हें अपने साथ दुकानों पे ले जाए। रिचर्ड और बिक्री मैनेजर एक दुकान में गए। रिचर्ड ने न बेचे गए फ्रिटो लेस और मैक्सिको के मसालों पर ध्यान दिया।

रिचर्ड को एक विचार आया। उन्होंने चीटो में और मसाला मिलाने तथा अमेरिका के लोगों को वह खाने के लिए प्रेरित करने की सोची। हालाँकि उन्होंने सोचा कि ऐसा करना उसके लिए अनावश्यक हो सकता है, लेकिन वह भी खुद को इस कंपनी का मालिक मानते हैं इसलिए उन्होंने ऐसा करने के लिए अपना विचार बदल दिया।

एक दिन, कंपनी में कुछ बचे हुए फ्रिटोस पड़े थे। रिचर्ड उन्हें अपने घर ले गए और कुछ स्वादिष्ट मसाला मिला दिया। उन्होंने अपने द्वारा बनाए गए फ्रिटोस को अपने दोस्तों को दे दिया। उन फ्रिटोस का स्वाद सभी को पसंद आया। इसलिए उन्होंने इन फ्रिटोस को फ्रिटो-ले कंपनी के मालिक को देने का फैसला किया और उसे फोन किया। फ्रिटो-ले के सीईओ के सहायक ने फोन उठाया और अपना परिचय दिया और फिर उन्होंने पूछा कि रिचर्ड किस विभाग में काम करते हैं। रिचर्ड ने कहा कि वह कैलिफोर्निया में काम करते हैं। सहायक ने पूछा कि "क्या आप वही हैं जो कैलिफोर्निया शाखा के प्रधान हैं?" रिचर्ड ने जब यह कहा कि वह एक फर्श साफ करने वाले हैं, सहायक ने रिचर्ड से प्रतिक्षा करने के लिए कहा और बिन कोई अन्य बता किए फोन सी.ई.ओ. तक पहुँचा दिया।

रिचर्ड बड़बड़ाते हुए घर चले गये कि वह बिना पढ़े भी प्रेजेंटेशन कैसे कर सकते हैं और उन्होंने यह बात अपनी पत्नी को भी बताई। रिचर्ड की पत्नी ने चीटोस पैक कर उन्हें दे दिए और उन्हें मार्केटिंग करना सिखाया। रिचर्ड ने पहली बार 3 डॉलर में एक टाई खरीदा और मीटिंग में चले गए। उन्होंने निर्भीकता से प्रेजेंटेशन दी। एक शख्स ने रिचर्ड से पूछा कि वह इससे कितना कमा सकता है? रिचर्ड यह सोचकर काँप जाते हैं कि उनके बचपन से क्या हुआ है और उन्होंने अपना हाथ फैलाया और कहा "इतना"। तब सीईओ ने रिचर्ड को फर्श की सफाई बंद करने के लिए कहा और उन्हें उनके साथ शामिल होने के लिए कहा। जो प्रक्रिया रिचर्ड ने बताई थी वह शहर के एक हिस्से में शुरू की गई, जिसके परिणामस्वरूप लाखों डॉलर की आमदनी प्राप्त हुई। फिर रिचर्ड्स चीटोस पूरे अमेरिका में फैल गए और इसके परिणामस्वरूप भारी लाभ हुआ। आज रिचर्ड पेप्सिको के उपाध्यक्ष तथा एमबीए छात्रों के लिए प्रोफेसर हैं।

यदि हम जो भी काम करें उसमें सच्चाई एवं विश्वास के साथ काम करते हैं, तो हम एक दिन सफल होंगे। क्या आप विफलता को हराने के लिए तैयार हैं? यह मत सोचें कि हम जो छोटा सा काम करते हैं उससे क्या हासिल किया जा सकता है। सही समय आएगा। तब तक सच्चे बने रहें और मेहनत करें कि आप भी रिचर्ड की तरह सफल हो जाएं।

Heart Beat

यदि आप कोशिश करें तो सब कुछ संभव है!

मैं कॉलेज में पढ़ने वाला दूसरे वर्ष का छात्र हूं। मुझे मेरे माता-पिता ने बचपन से ही मसीह के प्रेम में पाला था। कभी-कभी मैं बच्चों की सेवकाई में शामिल होता हूँ। मेरा सपना है कि मैं अच्छी शिक्षा प्राप्त करूं और एक अच्छा आई.पी.एस अधिकारी बनूं। लेकिन, एक साथी छात्र की वजह से, जो वर्तमान में मेरे कॉलेज में पढ़ रहा है, मैंने हंसी मजाक में नशे का उपयोग करना शुरू कर दिया और अब मैं पूरी तरह से इसका इस हद तक आदी हो गया हूँ कि मैं उस आदत को नहीं छोड़ सका। मेरे माता-पिता को भी इस बुरी आदत के बारे में पता चला। वे मुझे कितनी भी सलाह दे लें, मैं इस आदत से निकलने में अयोग्य हूँ। कॉलेज में मेरे कुछ वरिष्ठ विद्यार्थी जो नशे के आदी है वे पकड़े जा चुके हैं और कॉलेज से निकाले जा चुके हैं। एक तरफ तो मैं पकड़े जाने से डरा हुआ हूँ और दूसरी ओर मैं अपने माता-पिता को शर्मिंदा करके चिंतित हूँ। मैं यह जानते हुए भी कि यह गलत है, इस आदत में फँस चुका हूँ। कृपया मेरी सहायता करें।

-राहुल, त्रिवेन्द्रम

प्रिय भाई राहुल, मैं आपका दर्द, निराशा व उदासी को समझ सकता हूं कि आप इस बुरी लत से निकल नहीं पाए हैं। राहुल इस संसार में कुछ भी असंभव नहीं है। आपने इस कहावत को सुना होगा, "जहां चाह वहां राह है"। आशापूर्ण एक बदलाव यह है कि आपको अहसास हुआ कि आप एक बुरी लत के आदी बन चुके हैं। आपके लिए एक अच्छा खबर है! आप इस बुरी लत से तभी निकल सकते हैं यदि आप सचमुच इससे निकलना चाहें। जब आप जरुरी कदम उठाते हुए नियमित रूप से प्रयास करेंगे तो आप इस बुरी लत से निश्चित तौर से निकल पाएंगे। लेकिन, आप फिर से इस बुरी लत में बने रहेंगे, तो आने वाला खतरा व आफ़त इससे भी भयानक होगी।

यदि आप इसमें बने रहेंगे तो यह परिणाम हो सकते हैं

- जैसा आपने कहा, यदि आपके कॉलेज के अधिकारियों को आपकी इस बुरी लत का पता चला, तो आपके निकाल दिए जाने का खतरा होगा।

- यदि पूलिस को इस बुरी लत का पता चला, तो वे आपको एन.डी.पी.एस. (नारकोटिस ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्सटेंस) अधिनियम 1985 के तहत 10,000 रुपये का जुर्माना, 6महीने की जेल, या दोनों कर देंगे।

- समाज आपको एक अपराधी के रूप में देखेगा और आपको समाज को बिगाड़ने वाले के रूप में समझेंगे।

- आप अपनी मंडली और अपने परिवार के लिए कढ़ा अपमान ले आएंगे।

• और आपका भविष्य का सपना (I.P.S) भी एक मिनट में चकनाचूर हो जाएगा।

• यदि आप एक IPS अधिकारी बनने जा रहे हैं और एक पल के लिए सोचें, क्या एक IPS अधिकारी का आपराधिक सूची में नाम होना और ड्रग प्रवर्तन विभाग में पकड़ा जाना अच्छा है। इसलिए उसके अनुसार व्यवहार करें।

• अधिकांश समय हम उस आदत को रोक नहीं पाते हैं जो हमें अत्यधिक आनंद देती है। लेकिन यह मत भूलें कि वही आनंद हमें गहरे पाताल में खींच सकता है और हमें डुबो सकता है।

शायद यदि आप इस बुरी आदत से बाहर आ गए तो...

• आपके पास बिना किसी हस्तक्षेप के अपनी डिग्री पूरी करने का अवसर है।

• यह आपके माता-पिता के लिए प्रतिष्ठा व सम्मान देगा। वे आपके लिए बहुत खुश होंगे।

• आपके मित्र समूह, समाज व मंडली में आपकी प्रतिष्ठा व सम्मान बढ़ेगा।

• आप एक IPS अधिकारी बनकर इस नशे की आदत को खत्म करने के लिए कोशिश कर सकेंगे और अन्य शाला़ओं को इससे बाहर निकलने के लिए सहायता कर पाएंगे।

इस प्रकार आपके दृढ़ संकल्प से कई सपने साकार किए जा सकेंगे। इसलिए शान्त तरीके में स्थिरतापूर्वक कार्य करें।

इस लत से छुटकारा पाने के लिए कुछ सलाह:

• पहला कदम यह है कि आपको नशा देने वाले दोस्तों से तुरंत रिश्ता खत्म कर दिया जाए।

• अपने मोबाइल फोन से उनका नंबर ब्लॉक कर दें।

• उन लोगों और चीजों से बचने की कोशिश करें जो आपको इस नशे की लत से लुभाते हैं।

• नशीले पदार्थों का विचार आपको एक खास समय पर ही परेशान करेगा। उस दौरान कुछ नया करने की कोशिश करें। जब आप खुद को साइकिल चलाना, गिटार बजाना, चलना, व्यायाम करना जैसी नई आदतों में शामिल करते हैं, तो आपकी मनोदशा बदलने की संभावना है।

• जितना हो सके खुद को व्यस्त रखने की कोशिश करें। जब आप निष्क्रिय रहेंगे तो अवांछित विचार उत्पन्न होंगे। इसलिए अपने दिन की योजना बनाएं, और बिना असफलता के इसका अभ्यास करें।

• राहुल! अगर आप ठान लें तो इस आदत से आसानी से छुटकारा पा सकते हैं। इसके लिए निरंतर अभ्यास करने वाले मन की आवश्यकता होती है। अपने मन को दृढ़ता से "नहीं" कहें।

• इसके बजाय जब कभी नशे का विचार आपके मन में आए तो एक बोतल पानी पीने के बारे में सोचें। लेकिन निश्चित करें कि आपके पास पानी के एक बोतल हमेशा रहे।

• सबसे बढ़कर, इस विश्वास व भरोसे में चलें कि यीशु आपसे बहुत प्रेम करते हैं, वे आपको कभी नहीं त्यागेंगे! यीशु आपको इस बुरी लत से पूरी तरह से छुटकारा देंगे। इसलिए विश्वास से प्रार्थना करें। सफलता यकीनन मिलेगा! आपका छुटकारा मार्ग ही में हैं!

यीशु जो जख्मी हुआ

"वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया, जो 'खोपड़ी का स्थान' कहलाता है और इब्रानी में 'गुलगुता'। वहाँ उन्होंने उसे और उसके साथ और दो मनुष्यों को क्रूस पर चढ़ाया, एक को इधर और एक को उधर, और बीच में यीशु को।" (यूहन्ना 19:17,18)

यीशु जो एक मनुष्य के रूप में इस संसार में आए, सबका भला करते रहे। लेकिन, वह पापरहित होते हुए भी क्रूस पर क्यों मरे?

यीशु के दिनों में, रोमी लोग उस देश पर शासन कर रहे थे। यदि कोई रोमी सरकार के खिलाफ बोलता या हत्या या चोरी जैसे अपराध करता, तो उन्हें क्रूर सज़ा दी जाती थी। उन सजाओं के बीच, क्रूस पर चढ़ाया जाना सबसे भयानक सज़ा थी। रोमी सैनिक कठोर हृदय के लोग थे और कभी भी दया नहीं करते थे। वे क्रूस उठाकर ले जाने वालों को क्रूसित किए जाने की जगह तक मारते-पीटते रहते थे और उन्होंने यीशु के साथ भी ऐसा ही किया। सजा का कारण उन लोगों के क्रूस के ऊपर लिख दिया जाता था। जब यीशु ने क्रूस उठाई तो जिन लोगों ने भी उनकी ओर देखा सबने कहा यह वही है जो इस सरकार के विरोध में बोलता था। यह एक शर्मनाक अनुभव था।

जो परमेश्वर पवित्र, पापरहित और निर्दोष है उसे क्रूस को उठाने क्यूं उठाना चाहिए और ऐसे अपराधियों के मध्य क्यों लटकाया जाना चाहिए जो वास्तविक लुटेरे हों! इस मामले की जाँच करने वाले रोमी सूबेदार ने यह अंगीकार किया कि 'मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता'; उसकी पत्नी ने कहा, 'वह एक धर्मी व्यक्ति था'; यहूदा ने चिल्ला कर कहा 'मैंने निर्दोष लहू बहाया है', लेकिन फिर भी यीशु का क्रूस पर मरना नियत था।

क्या आप जानते हैं कि यीशु को क्रूस पर क्यों लटकाया गया था?

बाइबल हमें बताती है कि गलातियों 1:4 में 'उसी ने अपने आपको हमारे पापों के लिये दे दिया,' और इफिसियों 5:2 में 'मसीह ने भी तुम से प्रेम किया; और हमारे लिये अपने आपको सुखदायक सुगन्ध के लिये परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया।' कोई मनुष्य उनकी जान नहीं ले सकता था लेकिन उन्होंने स्वेच्छा से हमारे लिए इसे बलिदान कर दिया। जैसा यीशु ने यूहन्ना 10:18 में कहा, 'कोई उसे मुझसे छीनता नहीं, वरन् मैं उसे आप ही देता हूँ। मुझे उसके देने का अधिकार है, और उसे फिर लेने का भी अधिकार है", उन्होंने हमारे लिए क्रूस पर अपना जीवन दे दिया। तीसरे दिन, यीशु मसीह ने अपने पुनरुत्थान के द्वारा मृत्यु पर विजय प्राप्त की और फिर से जी उठे। बाइबल में मसीह के बारे में सभी भविष्यवाणियां पूरी हुईं।

क्यों? परमेश्वर को एक इंसान के रूप में किस लिए आना चाहिए और हमारे लिए क्यों मरना चाहिए? उसका लहू हमारे लिए बलिदान के रूप में क्यों बहाया जाए?

मेरे प्रिय युवाओं, आप मसीही हो सकते हैं या अविश्वासी हो सकते

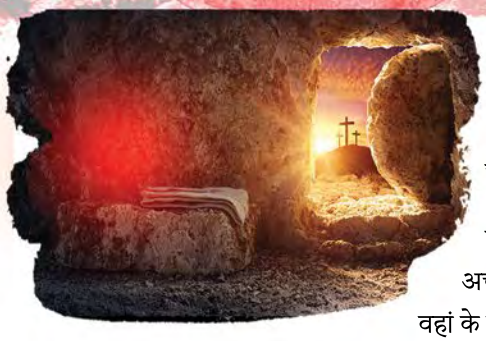

हैं या आप नास्तिक भी हो सकते हैं! यीशु मसीह, आपकी भलाई, आपके आशीषों के लिए, आपको उग्र नरक के चंगुल से छुड़ाने के लिए, आपको स्वास्थ्य देने व आपके सब दुःखों को आनन्द में बदलने के लिए, क्रूस पर मरे और अपने जीवन को एक जीवित बलिदान के रूप में दे दिया।

यीशु को मेरे लिए क्रूस पर अपना लहू क्यों बहाना चाहिए?

आपके दुखों को आनंद में बदलने के लिए यीशु क्रूस पर मरे। इसलिए, आज भी हम ऐसे कई साक्ष्यों के बारे में सुनने में सक्षम हैं जिनमें लोग तनाव से मुक्त हो गए हैं और बड़े आनंद से एक महान छुटकारे का आनंद ले रहे हैं। क्या आप चिंतित हैं कि क्या मेरी समस्या कभी हल नहीं होगी?, क्या मेरे दुख कभी नहीं रुकेंगे? क्या शुभ समाचार मेरे पास नहीं आएंगे? मेरे प्रिय जवानों, एक परमेश्वर है जो क्रूस पर आपके लिए मर गया ताकि आपके सारे दुख खुशी में बदल जायें।

उनके कोड़ों का क्या महत्व है?

परमेश्वर हमें अपने हाथों से चंगा करतें हैं, जो उन घावों के साथ हैं जिन्हें उन्होंने क्रूस पर दुःखों के कारण अनुभव किया। यीशु ने अपनी खून बहाया ताकि हम पाप से छुड़ाए जा सकें। वह हमें चंगाई देने की खातिर घायल हुए व कुचले गए। आप मनुष्यजाति की मुख्य समस्या बीमारी व घातक रोग हैं। लेकिन, मेरे प्रियो, जब यीशु का हाथ हमें स्पर्श करता है, तो अलौकिक सामर्थ्य निकलती है। जैसा कि हम मत्ती 8:17 में पढ़ते हैं, "उसने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया"। यीशु ने न केवल हमारे पापों को उठा लिया, उन्होंने हमारी सब बीमारियों, दुर्बलताओं, तथा शारीरिक रोगों को क्रूस पर उठा लिया और कोड़ों को सहन किया। आज हम उनके कोड़े खाने से चंगे होते हैं!

एक भाई था जो विदेश में काम करता था। अचानक उसकी दाहिनी टाँग में लकवा हो गया। वहां के डॉक्टरों ने कहा कि वह चल नहीं पाएगा, तो वह वापस भारत लौट आया। यहाँ भारत में, एक दिन उसे व्हीलचेयर पर जाँच के लिए अस्पताल ले जाया गया। डॉक्टरों को पता लगा और उन्होंने उसे समझाया कि चूंकि उसकी रीढ़ की हड्डी में डिस्क प्रोलैप्स (हड्डी आगे की ओर बढ़ना) है, वह सर्जरी के बाद ही चल सकता है और उसकी सर्जरी की तारीख तय कर दी गई।

उसी दिन उसकी पत्नी व उसकी बहनें घर पर हमारा टीवी कार्यक्रम देख रही थीं। उसकी पत्नी उत्साह से प्रचार सुन रही थी और छुटकारे के लिए अपने पति के छूने जाने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना कर रही थी। जिस क्षण वे घर पर प्रार्थना कर रहे थे, उसी समय परमेश्वर के चंगाई वाले हाथ ने इस व्यक्ति को अस्पताल में छुआ और उसे चंगा किया। वह तुरंत चलने लगा! जब यीशु के जख्मी व छेदे गए हाथ उसके पास पहुँचे तो यह व्यक्ति जो लंगड़ा था और उसे व्हीलचेयर में ले जाया गया था, वह अपने आप चलने में सक्षम बना। जब यीशु हमें स्पर्श करते हैं, तो इसमें एक दैव्य चंगाई होती है! इस कारण, यीशु ने उन अपराधों को ले लिया और वह कुचला गया ताकि हम एक स्वस्थ्य जीवन जीएं!

मेरे प्रिय युवाओं, यीशु ने हमारे सभी रोगों को क्रूस पर ले लिया है! क्या आप आज किसी कमजोरी या बीमारी से पीड़ित हैं? रोग जो भी हो, डरें मत! यीशु ने आपके रोगों को क्रूस पर ले लिया है; उनके कोड़े खाने से आप चंगे हो जाएंगे; जब भी आप प्रार्थना करें, इस सच्चाई का दावा करें और अंगीकार करें कि आप उनके कोड़ों के कारण चंगे हो गए हैं और आपके सभी रोग यीशु द्वारा क्रूस पर ले लिए गए हैं। विश्वास में इसका दावा करें तथा यीशु को निहारें जो आपके लिए घायल किए गए और कुचले गए। आपके जीवन में एक चमत्कारी छुटकारा होने जा रहा है!

राहाब

राहाब बाइबल में सबसे अनपेक्षित पात्रों में से एक थी। यहोशू ने यरीहो की जासूसी करने के लिए दो व्यक्तियों को भेजा। वे राहाब नामक एक वेश्या के घर में रहे। जब यरीहो के राजा ने सुना कि उस रात कोई भेदिए देश का भेद लेने आए हैं, तो उसने अपने सैनिकों राहाब के पास उन्हें बाहर लाने को भेजा। राहाब ने इस्राएलियों को ले जाकर अपने घर के ऊपर छिपा दिया, और कहा, यह सच है कि वे यहां आए थे। लेकिन यह नहीं जानते कि वे कौन हैं। और वे रात को चले गए। मुझे यकीन नहीं है कि वे कहाँ चले गए। उसने राजा के सैनिकों से कहा कि जाओ और उन्हें जल्दी से ढूंढो **(यहोशू 2:3-5)** और वे सैनिक चले गए और उन्हें न ढूंढ पाए। उसने उनके साथ अच्छा व्यवहार किया और उनके जाने से पहले उनसे शपथ ली कि आपका परमेश्वर यहोवा ऊपर स्वर्ग में तथा नीचे पृथ्वी पर भी परमेश्वर है। इसलिए जब आप लोगों ने हमारे शहर पर कब्जा कर लिया, मेरी विनती यह है कि आप लोग मुझसे प्रभु के नाम से शपथ लें कि क्योंकि मैंने आप लोगों पर दया की है इसलिए आप मेरे पिता के घराने पर भी दया करेंगे और आप मेरे पिता-माता और मेरे भाई बहनों को और जो कुछ उनका है उसे सुरक्षित रखेंगे और हमें मरने से बचाएंगे। उन्होंने उससे कहा कि जब यहोवा हमें यह भूमि दे दे तो हम तेरे साथ भलाई करेंगे **(यहोशू 2:14)**। इस प्रकार राहाब व उसका परिवार बच पाया।

हालांकि राहाब एक वेश्या थी, उसने इस्राएल के परमेश्वर पर भरोसा रखा और परमेश्वर ने उसके घराने को बचाया। आप कितने भी पाप से भरे क्यों न हों, परमेश्वर पर विश्वास करें। आप खुद को और अपने घराने को नगर के विनाश से बचा पाएंगे।

योना

योना एक नबी था। और यहोवा का वचन उसके पास पहुंचा, जिसमें यहोवा ने कहा, "उठकर उस बड़े नगर नीनवे को जा, और उसके विरुद्ध प्रचार कर; और मैं उनकी बुराई का नाश करूंगा।" परन्तु योना को डर था कि वे मन फिराएंगे, और परमेश्वर उन्हें नाश न करेगा; वह तर्शीश के बन्धे हुए जहाज़ पर चढ़कर चला गया। योना, जिसे किश्ती पर से फेंक दिया गया, मछली के पेट में अपने खुद को समर्पित करके 3 दिन तक दिन-रात प्रार्थना करता रहा: और यहोवा ने योना से कहा, मत डर; तब योना ने दूसरी बार यहोवा का वचन सुना, और नीनवे को गया, और आनेवाले विनाश का प्रचार किया। यह सुनकर नीनवे के सब लोगों ने उपवास किया तथा अपने बुरे कामों से मन फिराया और परमेश्वर ने वह विनाश न किया जो उन्होंने ने कहा था कि वह करेंगे। योना के प्रचार से नीनवे नगर फिर से बस गया।

प्रिय पाठकों, योना के समर्पण के माध्यम से, 120,000 लोगों ने पश्चाताप किया और वे विनाश से बच गए। यदि हम भी प्रभु के वचन को सुनें और अपने खुद को पूरी तरह से समर्पित कर दें तो परमेश्वर उन लाखों आत्माओं को छुड़ाएंगे जो हमारे आस-पास नाश हो रही हैं। आएं हम सुने व खुद को समर्पित करें!

एमी कारमाइकल

एक शाम, उन्होंने एक आवाज़ सुनी "सेवकाई के लिए चली जा" और उन्होंने जापान की ओर अपनी यात्रा जारी रखी। एमी कारमाइकल **15** महीने की सेवा के बाद श्रीलंका में सेवकाई के कार्य के लिए चली गईं।

उस समय, भारत में देवदासी प्रणाली का पालन किया जाता था। समाज बिगड़ रहा था। जब इन लोगों को बचाने या समर्थन करने के लिए कोई आगे नहीं आया तो एमी कारमाइकल **1895** में इस तबाही को रोकने के लिए उत्साह में भर कर भारत के लिए रवाना हुई। छोटी लड़कियों और महिलाओं की तरह, लड़के भी मंदिरों के लिए समर्पित किए जाते थे और उन्हें नाटक कंपनियों को कीमत पर बेच दिया जाता था। इस तरह के अनैतिक जीवन को रोकने के लिए, **1926** में, डोन्हावूर संघ की स्थापना की गई। एमी कारमाइकल ने असहायों, विधवाओं, पीड़ितों, पापियों को एक शरण स्थान दिया और उन्हें अपने कार्यों के माध्यम से मसीह का प्रेम दिखाया। उन्होंने भारत में **56** वर्ष तक दबे-कुचले लोगों की सेवा की है और **38** किताबें लिखी हैं। इन में से कई किताबें उनके जीवनकाल के उस समय में लिखी गईं जब वे इक हड्डी टूटने की वजह से **20** वर्षों तक बिस्तर पर पड़ी रही थीं।

प्रिय युवाओं, जो इसे पढ़ रहे हैं, एमी तमिलनाडु में रहने वाले कई लोगों के लिए मुफ्त में एक अनमोल छुटकारा लेकर आईं। उनके बलिदान से, बिना विवाह किए, यदि वह इतना बड़ा काम कर सकती हैं, तो आप भी कर सकते हैं। उठें व परमेश्वर के लिए साहसी होकर चमकें। बहुतों को छुड़ाने के लिए परमेश्वर आपको एक उपकरण के रूप में उपयोग करेंगे! क्या आप उठेंगे?

रॉलेंड

अफ्रीकी मिशनरी इतिहास। रॉलेंड जो इंग्लैंड में एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मे, अपनी पारिवारिक परिस्थितियों के कारण नौकरी की तलाश में कनाडा चले गए। वहां, उन्होंने परमेश्वर की बुलाहट प्राप्त की और स्वयं को एक मिशनरी के रूप में समर्पित कर दिया। उन्होंने महसूस किया कि परमेश्वर उन्हें सूडान देश में एक मिशनरी के रूप में बुला रहे हैं। उन्होंने तीन लोगों के साथ अपनी यात्रा शुरू की। रास्ते में मलेरिया के कारण यह यात्रा रुक गई। इसलिए, वह वापस इंग्लैंड लौट आए। उनकी दूसरी यात्रा भी कुछ बाधाओं के कारण बीच में ही रुक गई। रॉलेंड इस बारे में कुछ इस तरह बताते हैं, "परमेश्वर पर मेरा विश्वास अतयंत गहराई तक कपकपाता दिखाई दिया। आखिरकार, मैंने अपना विश्वास ठोस नींव, यीशु, पर रखना सीख लिया।" रॉलेंड, जिन्होंने **1895** में अपने धार्मिक अध्ययन को पूरा किया, ने **1898** में "सूडान आंतरिक मिशन" नामक एक मिशनरी क्लब की स्थापना की। उनकी तीसरी मिशनरी यात्रा एक सफलता के रूप में समाप्त हुई। उनके पाँच वर्षों के मिशन में, **10000** से अधिक विश्वासी तथा **100** से अधिक आराधना समूह उनके मिशन के विकास को प्रदर्शित करते हैं। उन्होंने इतनी आत्माओं को परमेश्वर के लिए बचाया, क्योंकि वह बाधाओं को देखे बिना भागते थे।

प्रिय युवाओं! जब आप बाधाओं को नहीं देखते हैं बल्कि बिना थके अपनी सेवकाई के लिए दौड़ते हैं, तो परमेश्वर आपको एक ऐसे पात्र के रूप में इस्तेमाल करेंगे जो बहुत सारी आत्माओं को बचाता है। अपने विश्वास में दृढ़ रहें! परमेश्वर आपका उपयोग करेंगे और बहुतों को बचाएंगे!

बेदारी
शिक्षा विभाग

कुल मिलाकर विश्वभर में भारत में छात्रों की संख्या सबसे अधिक है। करीब 32 करोड़ लोग स्कूल-कॉलेजों में हैं। ये छात्र हमारे देश की जाग्रति में एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं। आज बच्चों से लेकर कई किशोरों तक ऐसे हैं जो प्रार्थना की आत्मा उँडेले जाने के समय घंटों प्रार्थना करते हैं। विशेष रूप से मिशनरियों द्वारा शुरू किए गए स्कूलों व कॉलेजों में प्रार्थनाओं के कारण, ये छात्र प्रार्थना योद्धाओं में बदल गए हैं। पैट्रिक जोशुआ ने यीशु को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में उस समय स्वीकार किया जब वह काल्डवेल हायर सेकेंडरी स्कूल में 10वीं कक्षा में पढ़ रहे थे। वह एक युवा व्यक्ति थे जो स्कूल के दिनों से प्रार्थना करते थे। बाद के दिनों में, उनकी वजह से कई लोग प्रार्थना योद्धा बने। केवल वह ही नहीं, बल्कि भाई एमिल जेबासिंह ने भी जब वे कॉलेज में पढ़ रहे थे, तब प्रार्थना समूह बनाए और किशोर लोगों से भी प्रार्थना करवाई।

वे अपनी कॉलेज की पढ़ाई में बढ़े और जब वह सायरपूरम कॉलेज में एक प्रोफेसर के रूप में कार्य कर रहे थे, वे कई किशोर बच्चों के समूह के साथ गाँवों में सुसमाचार सुनाने के लिए गए और कई लोगों को मसीह के पास लाए।

उनके कारण तूतुकुड़ी, तिरुनेलवेली और कन्याकुमारी में कई किशोर बच्चों में एक बड़ी जाग्रति आई है। क्या आप जानते हैं परमेश्वर ने उन्हें क्यूं इस्तेमाल किया? गवाह के रूप में उनके प्रार्थनामय जीवन ने कई किशोरों को मसीह की ओर आकर्षित किया।

यदि आप उनकी तरह इस्तेमाल होना चाहते हैं, तो आपको स्वयं को परमेश्वर को समर्पित करना चाहिए और एक पवित्र जीवन जीना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए। तब परमेश्वर बिना किसी संदेह के आपका उपयोग करेंगे। बाइबल कहती है, "जैसे वीर के हाथ में तीर, वैसे ही जवानी के बच्चे होते हैं" (भजन संहिता 127:4)। एक छात्र के रूप में यह जीवन हमारे जीवन में केवल एक बार होता है। यदि आप अपनी शक्ति, प्रतिभा और इच्छा शक्ति को परमेश्वर को सौंप देते हैं तो वह आपकी इच्छा के अनुसार आपका उपयोग करेंगे। जब दानिय्येल व उसके मित्र बाबुल में थे, उन्होंने बाबुल के पापों में शामिल न होने का निश्चय किया और उन्होंने वैसा ही किया। चूँकि उन्होंने विलासी जीवन को ठुकरा दिया और परमेश्वर के सामने आत्मसमर्पण कर दिया, इसलिए बाबुल देश हिल गया।

मेरे प्रिय युवा भाइयों-बहनों! हमारे परमेश्वर जिन्होंने हमें बनाया है, उन्होंने हमें हमारे जीवन में सुंदर पड़ाव दिए हैं। उनमें से सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव एक विद्यार्थी होने का पड़ाव है। जब आप स्कूल व कॉलेज में पढ़ते हुए सुसमाचार सुनाने के लिए समर्पित होते हैं और प्रार्थना करते हैं तो परमेश्वर आपके द्वारा आपके स्कूलों व कॉलेजों में बड़ी जाग्रति लेकर आएंगे। "आप जगत की ज्योति हैं..." (मत्ती 5:14)। आप में मौजूद ज्योति अंधकार में पड़े विद्यार्थियों को पाप से ज्योति में ला सकती है।

आएं प्रार्थना करें और विजय पाएं !

बाइबल हमें प्रार्थना के विभिन्न पहलू सिखाती है, जिनमें से एक दूसरे के लिए आँसुओं के साथ याचना की प्रार्थना, प्रार्थना का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जिसे "याचना की प्रार्थना" के रूप में जाना जाता है। इस प्रार्थना को हमारे व्यक्तिगत प्रार्थना जीवन, संगति प्रार्थना तथा कलीसिया मंडली के साथ प्रार्थना में शामिल किया जाना आवश्यक है।

एक याचना की प्रार्थना क्या है?

परमेश्वर व मनुष्य के बीच स्वयं को प्रस्तुत करके और परमेश्वर के प्रकोप से मानव जाति के उद्धार और सुरक्षा के लिए गिड़गिड़ा कर की गई प्रार्थना।

किन कारणों से, याचना की प्रार्थना की जा सकती है?

✔ परमेश्वर के क्रोध को शांत करने के लिए (भजन 106:23)

✔ गुलामी से छुड़ाने के लिए (गिनती 20:16)

✔ शत्रु की योजनाओं में बाधा डालने के लिए (1शमूएल 7:5,10)

✔ लोगों को इस याचना की प्रार्थना के लिए खुद को कैसे तैयार करना चाहिए?

✔ एक व्यक्ति को आत्माओं पर दया करनी चाहिए और उनके लिए बोझ रखना चाहिए, और घट रही घटनाओं को देखते हुए ईमानदारी से परवाह करनी चाहिए।

✔ शैतान को रोकने के लिए उन्हें अपनी स्वार्थ, सांसारिक इच्छाओं, व लोभ को सूली पर ठोक देना चाहिए।

✔ उनका परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध होना चाहिए। "क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता" (यूहन्ना 3:2)

✔ प्रार्थना के अंत में, खुद को यीशु के लहू में ढँक लें और अपनी सुरक्षा के लिए परमेश्वर के पूरे कवच को धारण कर लें।

✔ मूसा, अब्राहम जैसे कई चुने हुए लोग इस याचना की प्रार्थना के माध्यम से योद्धाओं के रूप में रहते थे। आप इस सदी में याचना की प्रार्थना के योद्धा बनने जा रहे हैं!

प्रिय युवाओं, जो इसे पढ़ रहे हैं, आप परमेश्वर द्वारा चुने गए एक मध्यस्थ के रूप में अंतराल में खड़े होने के लिए और परमेश्वर के प्रकोप से इस देश की रक्षा के लिए प्रार्थना करने के लिए और नरक की ओर जाने वाले लोगों को छुड़ाने और उन्हें स्वर्ग की ओर निर्देशित करने के लिए चुने गए हैं। क्या आप दूसरों के लिए याचना की प्रार्थना करने के लिए खुद को प्रतिबद्ध करेंगे?

प्रार्थना गाइड

अप्रैल 2022

बोर्ड परीक्षा

तमिलनाडु में, कक्षा 12 के छात्रों के लिए अकादमी वर्ष 2021-22 की बोर्ड परीक्षा 5 मई से शुरू होकर 28 मई तक समाप्त होने वाली है। कक्षा 10 के लिए, बोर्ड परीक्षा 6 मई से शुरू हो रही है और 30 मई तक समाप्त होने वाली है और कक्षा 11 के लिए बोर्ड परीक्षा 9 मई से शुरू होगी और 31 मई तक समाप्त होगी। सरकार ने घोषणा की है कि व्यावहारिक परीक्षाएं 25 अप्रैल से शुरू होकर 2 मई तक समाप्त होंगी। कक्षा 10 के लिए लगभग 9 लाख छात्रों के लिए, कक्षा के लिए लगभग 11.8 लाख और 49 हजार छात्रों के लिए, कक्षा 12 के लिए लगभग 8 लाख 23 हजार छात्रों के लिए 23 लाख छात्र हैं, जो इस वर्ष सार्वजनिक परीक्षा में शामिल होने जा रहे हैं।

प्रार्थना विषय

1. आएं प्रार्थना करें कि परमेश्वर उन 23 लाख छात्रों को ज्ञान और बुद्धि से भर दें।
2. आएं हम परीक्षा से डरते छात्रों के लिए प्रार्थना करें। वे बिना किसी डर के अपनी परीक्षा अच्छी तरह से लिखने पाएं।
3. आएं हम छात्रों पर परमेश्वर की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें ताकि उन्हें किसी भी बीमारी या परिवार में समस्याओं का सामना न करना पड़े।
4. आएं हम प्रार्थना करें कि छात्रों के पास अपने पाठों को याद रखने के लिए अच्छी स्मरण शक्ति हो।
5. आएं हम प्रार्थना करें कि सरकार कक्षा 10 और कक्षा 12 के छात्रों को उनके उच्च अध्ययन पर मार्गदर्शन करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम तैयार करे।

गर्भपात

भारत में 1000 महिलाओं में से 13 महिलाओं का गर्भपात हो जाता है। इन 13 महिलाओं में से 5 महिलाओं का गर्भपात अपने आप हो जाता है, लेकिन बाकी 8 महिलाओं का गर्भपात उनकी मर्जी से होता है। आज की ऐसी जीवनशैली में, गर्भपात की दर बढ़ रही है। हर वर्ष भारत में 78% गर्भपात इसी उद्देश्य के लिए बनी विशेष दवाईयों से होता है। एक अधय्यन के अनुसार हर वर्ष भारत में 1.56 करोड़ गर्भपात मामलों में से तकरीबन 78% गर्भपात केवल गर्भपात की दवाईयों से बिना किसी चिकित्सक सुविधा के किए जाते हैं।

प्रार्थना विषय

1. आएं हम महिलाओं में होने वाले गर्भपात को रोकने के लिए प्रार्थना करें।
2. आएं हम स्वेच्छा से गर्भपात करती उन महिलाओं में नैतिक भावना के लिए प्रार्थना करें ताकि वे एहसास कर पाएं कि गर्भपात एक पाप है।
3. आएं हम प्रार्थना करें कि सरकार गर्भावस्था के दौरान गर्भपात को रोकने के लिए चिकित्सा सुविधाएं स्थापित करे।
4. अवैध संबंध के कारण महिलाएं गर्भपात कराती हैं। आएं हम प्रार्थना करें कि ये लोग अपने पाप से पश्चाताप करें।
5. आएं हम लोगों के बीच इस नकली गर्भपात की दवाईयों और नकली डॉक्टरों की पहचान करने के लिए जागरूकता के लिए प्रार्थना करें।

एड्स

विश्वभर के देशों में भारत एड्स रोगियों की संख्या में दूसरे स्थान पर है। हर दिन लगभग **900** बच्चे एड्स से प्रभावित होते हैं। आंकड़े बताते हैं कि भारत में करीब **5.13** लाख लोग एड्स से प्रभावित हैं। विश्व स्वास्थय संगठन ने जानकारी जारी करते हुए बताया कि दुनियाभर में करीब **18** लाख लोग टीके के जरिए एड्स से लड़ रहे हैं।

प्रार्थना विषय

1. आएं हम एड्स से प्रभावित प्रत्येक व्यक्ति की चंगाई की प्रार्थना करें।

2. इस रोग से बच्चे प्रभावित होते हैं। आएं हम बच्चों में परमेश्वर का सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें।

3. दुनिया भर में लगभग **18** लाख लोग एड्स से प्रभावित हैं। आएं हम प्रार्थना करें कि भविष्य में कोई भी इस बीमारी से प्रभावित न होने पाए।

4. आएं हम एड्स से पीड़ित मरीजों के लिए पार्थना करें कि उनकी चिंता, निराशा, शर्मिंदगी व अपमान जाता रहे।

5. आएं हम इस रोग के प्रति जागरुकता के लिए तथा सरकार द्वारा इसके सही उपचार के विकल्प खोजने के लिए प्रार्थना करें।

जाग्रति – शिक्षा विभाग

भारत में **14** लाख स्कूल हैं। **410** अंतर्राष्ट्रीय स्कूल, **900** विश्वविद्यालय, **40,000** कॉलेज हैं। इनमें एक लाख से ज्यादा छात्र पढ़ाई कर रहे हैं।

प्रार्थना विषय

1. आएं हम प्रार्थना करें कि शिक्षा विभाग पर सामर्थशाली जाग्रति की आग उंडेल दी जाए।

2. आएं हम प्रार्थना करें कि स्कूल, कॉलेज में पढ़ने वाले छात्रों तथा उनके शिक्षक एवं प्रोफेसर उद्धार पाएं।

3. आएं हम प्रार्थना करें कि सरकार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दस्तावेजीकरण करे और छात्रों के लिए उचित मौलिक पाठ्यक्रम लाए।

4. आएं हम शिक्षा विभाग में प्रत्येक अधिकारी और मंत्री के उद्धार के लिए प्रार्थना करें।

5. आएं हम शिक्षा विभाग में रिश्वत की समाप्ती और परमेश्वर के संचालन के लिए प्रार्थना करें।

Petra

पतरस के साथ एक यात्रा

जैसा कि हमने पिछले महीने पतरस के साथ अपनी जलयात्रा का आनंद लिया था, क्या आप सभी उसके साथ ताबोर पहाड़ पर यात्रा पर जाने के लिए तैयार हैं? (मत्ती 17, मरकुस 9, लूका 9:28-36)

यीशु मसीह अपने सबसे करीबी शिष्यों पतरस, यूहन्ना व याकूब के साथ प्रार्थना करने के लिए एक पहाड़ पर गए। इस पहाड़ को ताबोर पर्वत के नाम से जाना जाता है। यह गलील सागर से 18 किलोमीटर दूर स्थित है। यहाँ कितने ही युद्ध हो चुके हैं। यहीं पर बाराक और दबोरा ने सीसरा को एक साथ हराया था (न्यायियों 4:6-12)। जब यीशु ने इस पहाड़ पर खड़े होकर प्रार्थना की, तो उनका रूपान्तर हो गया और उनका चेहरा सूरज की तरह चमक उठा। उनके वस्त्र रोशनी, बर्फ के समान के समान श्वेत हो गए और कोई व्यक्ति किसी वस्त्र को धोने पर भी उतनी श्वेत नहीं बना सकता था। तब तक चेलों ने मूसा व एलिय्याह को यीशु के साथ बातचीत करते देखा। जिन चेलों ने मूसा और एलिय्याह को पहले कभी नहीं देखा था, उन्होंने उन्हें पहचान लिया। यह उनके लिए एक उल्लेखनीय अनुभव था। स्वर्ग में लोगों को एक-दूसरे से परिचित करवाने की कोई जरूरत नहीं है। हम पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित होंगे और वह हमें सब कुछ प्रकट करेगा।

बाइबल विशेषज्ञ इस बात की व्याख्या यह कहते हुए करते हैं कि, मूसा उन लोगों के लिए एक गवाही के रूप में खड़ा था जो मृत्यु से पुनर्जीवित होने जा रहे हैं और एलिय्याह उन लोगों के लिए एक गवाही के रूप में खड़ा था जो कभी भी मृत्यु का सामना किए बिना स्वर्ग जा रहे हैं। इस पृथ्वी पर रहते हुए, मूसा को कनान में प्रवेश करने से मना कर दिया गया था क्योंकि उसने छोटी सी गलती की थी। यद्यपि मूसा के लिए एक सामान्य व्यक्ति के रूप में इसे अस्वीकार कर दिया गया था, हम देख सकते हैं कि पृथ्वी पर रहते हुए उसे यीशु मसीह की उपस्थिति का आनंद लेने की आशीष प्राप्त हुई। वे उस मृत्यु के कार्य को पूरा करने की बात कर रहे थे जो क्रूस पर चढ़ने के द्वारा यीशु को सौंपा गया था।

पतरस को बातों को गंभीरता से न लेने और महत्वपूर्ण बातें होने पर भी लापरवाह रहने की आदत है। उदाहरण के लिए, जब यीशु गतसमनी में दु:ख व दर्द से भरे हृदय से प्रार्थना कर रहे थे, पतरस सो रहा था (मत्ती 26:40)। जब राजा हेरोद ने उसे कैद कर लिया और उसे बेड़िया पहना दी, तब भी पतरस ऊंघ रहा था। यही घटना रुपांतरण के पहाड़ पर भी घटित हुई। लेकिन पतरस यीशु, मूसा व एलियाह को एक साथ देखकर बहुत घबरा भी गया था; उसने कहा कि हम उनके रहने के लिए तंबू बनाएंगे। हाँ, रुपांतरण के पहाड़ का अनुभव एक अद्भुत बात है। लेकिन यीशु उस पहाड़ के नीचले स्थान में रहते उन लोगों के पास गए जिनकी बहुत सी जरुरतें थीं और जिन्हें चंगाई व छुटकारे की जरुरत थी।

परमेश्वर के साथ घनिष्ठ अनुभव होना जरूरी है लेकिन मैदान में जाना और परमेश्वर के लिए काम करना भी उतना ही जरूरी है।

अचानक, एक उज्ज्वल बादल ने उन्हें ढँक दिया, और उसमें से एक आवाज निकली, "यह मेरा प्रिय पुत्र, जिससे मैं प्रसन्न हूँ; इसकी सुनो!" पतरस पहचानता कि यह वही आवाज है जो यीशु के बपतिस्मा लेने के समय सुनाई दी थी। जब वे पहाड़ से नीचे उतर रहे थे, तो यीशु ने उन्हें आज्ञा दी कि जो कुछ उन्होंने देखा है वह उसे यीशु के पुनरुत्थान तक किसी से साझा न करें और चेलों ने ऐसा ही किया (लूका 9:36)। बाद में, अपनी एक पत्री में, पतरस ने लिखा कि, एक बच्चे के समान सभी के साथ अपनी चीज़ें साझा करने के अपने स्वभाव के बावजूद, उसने इस बात को गुप्त रखा (2पतरस 1:17, 18)।

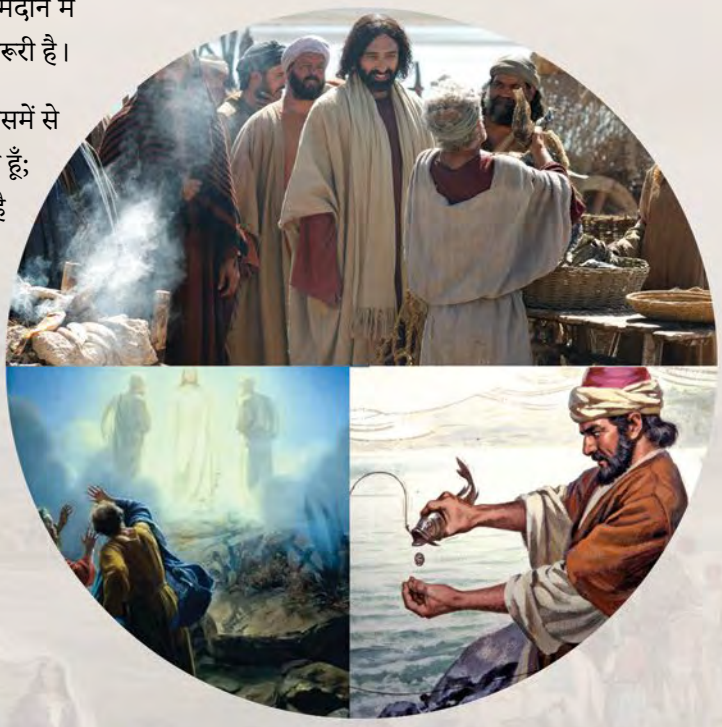

मछली के मुंह में चांदी का सिक्का:

यहूदी परंपरा यह है कि प्राणों को पापों से छुटकारे के लिए एक निश्चित राशि का कर कलीसिया को देना पड़ता है (निर्गमन: 30:15)। जब यीशु कफरनहूम में थे, यूहदी लोग पतरस से पूछने लगे कि यीशु कर क्यों नहीं दे रहे हैं। यीशु पूरी तरह से पापों से मुक्त हैं और उन्हें किसी छुटकारे की आवश्यकता नहीं है; परन्तु उन्होंने परमेश्वर के जन या पुत्र होने का लाभ नहीं उठाया। वह कर देने को तैयार थे। लेकिन पतरस कर चुकाने के लिए आवश्यक पैसे को लेकर चिंतित था। जब वह इसके बारे में सोच रहा था, तो प्रभु ने उसे वह धन पाने का एक चमत्कारी तरीका बताया। परमेश्वर के वचनों पर भरोसा करते हुए, पतरस ने एक मछली पकड़ी। जैसा कि वह भी पेशे से एक मछुआरा था, वह समुद्र में गया, अपने चारा डाला, और जो पहली मछली मिली थी उससे अपने व यीशु के लिए कर का भुगतान करने के लिए पर्याप्त धन पाया। मछली ने, जो संभावित रूप से एक आदमी (योना का उदाहरण) को भी निगलने में सक्षम है, चांदी के सिक्के को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया। लेकिन बदले में वह पतरस के जाल में फँस गई और ज़रूरत पड़ने पर उसकी मदद की। क्या यह चमत्कार नहीं है?

आएं हम अगले संस्करण में पतरस के जीवन से और भी दिलचस्प कहानियों के साथ जारी रखें।

उत्तम रचना

प्रभु मेरा जीवन एक खाली कैनवास है
मैं इसे आपके हाथों में रखता हूं।
मेरे सारे रंग और ब्रश
आपके आदेश के अधीन हैं।
प्रभु यह एक कहानी बयान करें
ब्रश का हर स्पर्श, हर रेखा
उस सब की जो कुछ मैंने आप में पाया है
और जो कुछ पीछे छोड़ दिया है
जब भी मैं सीधा और ऊँचा खड़ा हुआ
यह गाते हुए, “मैं न डगमगाऊंगा!”
वो लम्हा जब मैं लड़ाई से पलट गया
और दौड़कर सीधे आपके पास आया।
आपने मुझे मेरी माँ के गर्भ में बनाया
तब भी आप मुझे जानते थे
मेरे जीवन को इससे बेहतर कौन रंग सकता है
जहाँ से यह पहली बार शुरू हुआ?
तो, जब मेरी जिंदगी खत्म हो जाएगी
और यह तस्वीर पूरी हो जाएगी
तो यह मात्र एक पेंटिंग से बढ़कर होगी
यह एक उत्तम रचना होगी।

RED ⚠ ALERT -

इस खतरे की घंटी श्रृंखला के माध्यम से, हम अपने आत्मिक जीवन में आने वाली असफलताओं, निराशाओं व तनाव के कारणों के साथ-साथ बाइबल में परमेश्वर द्वारा चुने गए पुरुषों द्वारा की गई छोटी-छोटी गलतियों के कारण सामने आए परिणामों पर विचार करके खुद को सही करने जा रहे हैं।

पिछली बार हमने आकान नामक एक व्यक्ति के बारे में देखा था, जो परमेश्वर द्वारा घृणित अशुद्ध तथा घिनौनी चीजों को छुपाने से अपनी जाति, परिवार और अंततः खुद पर बड़े विनाश को ले आया। अब हम एलीशा भविष्यद्वक्ता के गेहजी नामक सेवक के विषय में मनन करने जा रहे हैं।

हम उसके बारे में 2राजा अध्याय 4 और 5 में पढ़ सकते हैं।

हालाँकि गेहजी को एलीशा का सेवक कहा जाता था, लेकिन उसने एलीशा के प्रतिनिधि के रूप में काम किया, जो एक महान भविष्यवक्ता था, जिससे इस्राएल और आसपास के सभी देश डरते थे। एलीशा जहाँ भी जाना चाहता वह गेहजी को अपने प्रतिनिधि के रूप में भेज दिया करता था। (2राजा 4:28-29)। केवन इतना ही नहीं वह एलीशा द्वारा किए गए आश्चर्यकर्मों का भी साक्षी था। हालाँकि परमेश्वर ने उसे ऐसे बड़े पद पर रखा था, उसने बिना इसके महत्त्व को सोचे-समझे ऐसे काम किए जिनसे परमेश्वर प्रसन्न न हुए।

उसने अपने स्वामी के बजाय संसार का अनुसरण किया

नामान, जो अराम की सेना का सेनापति है, अपने कोढ़ से चंगा होने के लिए एलीशा के पास आया। जैसा कि एलीशा ने कहा, उसने यरदन में खुद को धोया और चंगा हो गया। जब उसने एलीशा को अपनी खुशी से कई भेंट देने की कोशिश की, तो उसने उन्हें मना कर दिया। क्योंकि एलीशा चाहता था कि अन्यजातियों के बीच परमेश्वर के नाम की महिमा हो और वह चाहता था कि नामान और अरामियों को पता चले कि परमेश्वर से प्राप्त हर भलाई मुफ्त में है। लेकिन परमेश्वर द्वारा किए गए चमत्कार को देखने के बजाय, गेहजी शाही वस्त्र तथा चाँदी के लिए लालायित हो गया और उन्हें लेने के लिए नामान के पीछे चला गया। एलीशा जो एलिय्याह का दास था, उसने अपने स्वामी के लिये सब कुछ त्याग दिया, और उसके पीछे पीछे चला, और आत्मा का दुगना हिस्सा मांगा। लेकिन गेहजी ने इसके बजाय संसार का अनुसरण किया और अपनी बुलाहट से दूर चला गया। जब हम इसे पढ़ते हैं तो आएं हम खुद को जाँचे और देखे कि हम किसका अनुसरन करते हैं। बहुत सी ऐसी बातें हैं (मोबाइल फोन, सोशल मीडिया, मोबाइल गेम, आदि) जो प्रतिदिन हमें परमेश्वर की बुलाहट से दूर ले जाती हैं। यदि आप बिना जागरुकता के इसमें कदम रखेंगे, तो आप बड़े खतरे में पड़ जाएंगे। "तुम मेरी जैसी चाल चलो जैसा मैं मसीह के समान चाल चलता हूँ।" (1कुरिन्थियों 11:1)

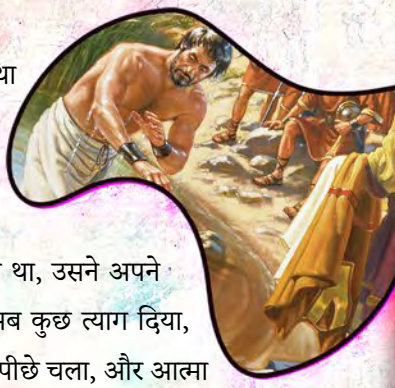

उसने अपना पाप छुपाया और झूठ बोला।

कोई भी लत शुरूआत में अच्छी तथा प्यारी लगेगी। लेकिन फंस जाने के बाद उस पाप को छिपाने के लिए ज्यादा झूठ बोलना

पड़ता है। यहाँ तक कि गेहजी ने भी अपने पाप को छिपाने के लिए अपने स्वामी से झूठ बोला। जब एलीशा ने गेहजी से पूछा कि वह कहाँ से आया है, तो उसने झूठ बोला कि वह कहीं नहीं गया। उसने किसी मनुष्य के विरुद्ध झूठ नहीं बोला, परन्तु परमेश्वर के आत्मा के विरुद्ध झूठ बोला। उसने सोचा कि इसे कोई नहीं ढूंढ पाएगा। नीतिवचन 28:13 के अनुसार “जो अपने पाप छिपा रखता है उसका कार्य सफल नहीं होता”। परमेश्वर ने गेहजी के पाप को उजागर किया। इसलिए नामान का कोढ़ उसे हो गया। इतना ही नहीं, एलीशा ने कहा कि यह कोढ़ उसके वंशजों पर भी बना रहेगा।

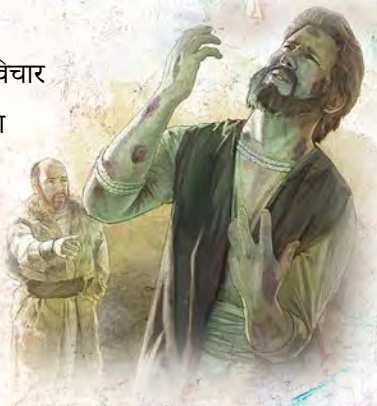

गेहजी का अंत दयनीय था। यह छोटा सा विचार “इसमें क्या गलत है?”, वासना में बदल गया जिसने उससे पाप करवा दिया। वह अपने पाप को छिपाने के लिए एक के बाद एक झूठ को जोड़ता गया और परमेश्वर के क्रोध उस पर और उसके वंशों पर रहा।

मेरे प्रिय युवाओं! “इसमें क्या गलत है? क्या मैंने कुछ ऐसा कर दिया जो पहले दुनिया में कभी किसी ने नहीं किया?” ऐसे विचार हमसे निर्भीकता से पाप करवाएंगे, हमें अपने पाप को छिपाने लिए झूठ बोलने की याद दिलाएंगे और हमें ऐसा करते रहने के लिए उकसाएंगे। शैतान एक झूठा है और सब झूठ का पिता है। इस प्रकार, परमेश्वर को पास हमारे लिए जो योजना और बुलाहट है और जो अभिषेक उन्होंने हमें दिया है वह थोड़ा थोड़ा कर सब जाता रहेगा और हमें अंधकार में ढकेल देगा। इसलिए आएं हम आज के अपने समय का विश्लेषण कर खुद को सुधारें और हम यह जाने कि इस जाग्रति के दिनों में परमेश्वर ने हमारे लिए क्या रखा है और हम उसकी ओर दौड़े। आएं हम इस जाग्रति के समय में उठे और उस परमेश्वर के लिए चमके। आएं हम इस खतरे की घंटी श्रृंखला में अगले व्यक्ति पर मनन करें।

“क्या यह समय चाँदी या वस्त्र या जैतून या दाख की बारियाँ, भेड़-बकरियाँ, गाय बैल और दास-दासी लेने का है? (2राजा 5:26)

छुटकारा

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों! मैं आप सभी को हर दिन प्रार्थना में और परमेश्वर के वचन पर मनन करने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ, ताकि आप प्रतिदिन मसीह के साथ अपने रिश्ते में विकास कर सकें।

क्या हमें छुड़ाया जाना चाहिए? हम छुड़ाए जाने के लिए किस में फंसे हैं? हमें छुड़ाने के लिए क्या किया गया? यह किसके द्वारा किया गया? और यह कैसे किया गया? इस लेख में हम इन पेचीदा सवालों के जवाब खोजेंगे।

सबसे पहले, हमें क्यों छुड़ाया जाना चाहिए? हम किस में फंसे हैं?

बाइबल कहती है, "... क्योंकि हम यहूदियों और यूनानियों दोनों पर यह दोष लगा चुके हैं कि वे सब के सब पाप के वश में हैं" (रोमियों 3:9), यह भी कहता है, "क्योंकि सबने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं" (रोमियों 3:23)। इसी प्रकार, भजनकार कहता है, "...पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा।" (भजन संहिता 51:5)। उपरोक्त सभी पद इस बात की पुष्टि करते हैं कि धरती पर जन्मा कोई भी व्यक्ति पाप में जन्मा है। उदाहरण के लिए, यीशु कहते हैं, "पर जो कुछ मुँह से निकलता है, वह मन से निकलता है, और वही मनुष्य को अशुद्ध करता है" (मत्ती 15:18)। तो यह स्पष्ट है कि सभी मनुष्य एक दुष्ट व पापी हृदय से जन्मे हैं। इसकी एक व्यवहारिक उदाहरण के तौर पर, जब एक तीन वर्ष के बच्चे से पूछा जाता है, "क्या ये तुमने किया? है न?" हमें हैरानी होगी कि बच्चा झूठ बोलता है। यह कैसे संभव है क्योंकि यह बच्चा तो यह तक नहीं जानता कि इस शब्द झूठ का क्या अर्थ है। लेकिन तीन वर्ष की आयु में, यह बच्चा झूठ बोल पा रहा है। इससे साबित होता है कि धरती पर जन्मे सभी मनुष्य पाप में जन्मे हैं।

हम इस पाप में कैसे पड़ गए?

इसका उत्तर उत्पत्ति अध्याय 3 में है। क्योंकि आदम ने, जो परमेश्वर के द्वारा सृजा गया पहला मनुष्य था, पाप किया, अर्थात् हम सब के सब पाप में जन्मे। हमें आदम से पाप विरासत में मिला है। प्रेरित पौलुस रोमियों 5:14 में इसकी व्याख्या करता है, "तो भी आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज्य किया, जिन्होंने उस आदम... के अपराध के समान पाप न किया।"

हमें इस पाप से क्यों बचाया जाना चाहिए?

बाइबल स्पष्ट रूप से कहती है कि हम परमेश्वर के द्वारा बनाए गए हैं। इसका समर्थन करने के लिए पर्याप्त प्रमाण हैं। इसलिए बाइबल रोमियों 2:6 में कहती है, कि हमें, जो परमेश्वर के स्वरूप में सृजे जा रहे हैं, अपने न्याय चुकाने के लिए अपने सृजनहार के समक्ष खड़े होना होगा और इब्रानियां 9:27 में हम पढ़ते हैं, "और जैसे मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है"। उसी प्रकार, हम 2कुरिन्थियों 5:10 में पढ़ते हैं, "क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय

परमेश्वर केवल छुटकारे के आधार पर प्रार्थना का उत्तर देते हैं, और किसी आधार पर नहीं।

- ओसवल्ड चेम्बर्स

आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों, पाए"। हम, जो पाप में पैदा हुए थे, पवित्र व सिद्ध परमेश्वर की उपस्थिति में कैसे आ सकते हैं? इसलिए उनकी उपस्थिति में प्रवेश करने के लिए, हमें छुटकारा पाना होगा। यदि हमें पाप के दण्ड से बचना है, तो हमें छुड़ाया जाना होगा। यदि हम मसीह के हैं, और मसीह में विश्वास करते हैं, तो हमारे लिए कोई दण्ड की आज्ञा नहीं है जैसा कि रोमियों 8:1 में कहा गया है, और हम पर दण्ड की आज्ञा न होगी क्योंकि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुके हैं जैसा कि यूहन्ना 5:24 में कहा गया है।

परमेश्वर ने हमें कैसे छुड़ाया?

यदि कोई किसी राज्य के मुख्यमंत्री से मिलना चाहता है, तो मुख्यमंत्री से पूर्व अनुमति प्राप्त करने के पश्चात ही वह व्यक्ति जाकर उनसे मिल सकता है। द्वार में प्रवेश करने पर व्यक्ति को अंदर जाने की अनुमति तभी दी जाएगी, जब वह सुरक्षा गार्ड को ली गई पूर्व अनुमति दिखाएगा। उसी प्रकार, परमेश्वर के स्थान में प्रवेश करने के लिए उन्होंने स्वयं हमारे लिए मार्ग बनाया है। हमें हमारे पापों से छुड़ाने के लिए, परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र, मसीह यीशु, को क्रूस पर हमारे पापों के दण्ड का भुगतान करने के लिए एक छुड़ौती के बलिदान के रूप में दे दिया। बाइबल कहती है, "क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकीb, उसको परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी" (रोमियों 8:3)। उसी प्रकार, बाइबल कहती है, "हमको मसीह में उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, परमेश्वर के उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है" (इफिसियों 1:7)। हां, मित्रों, परमेश्वर ने हमें छुड़ाने के लिए अपना पुत्र दे दिया है। हम भले काम करके या परंपराओं पर चलकर खुद को नहीं बचा सकते, लेकिन केवल यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा हम छुड़ाए गए हैं।

परमेश्वर ने हमें क्यों छुड़ाया?

इस प्रश्न का उत्तर एक शब्द में दिया जा सकता है। वह शब्द "प्रेम" है। हाँ, मेरे प्रिय युवाओं, बाइबल कहती है, "परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा" (रोमियों 5:8)। हाँ, जब हम पापी, अयोग्य, ही थे, मसीह ने हमारे लिए अपनी जान देना चुना। फिर भी हम हज़ार बार असफल हुए हैं, उनकी दया अभी भी बनी हुई है और हमें बचाया है। हमारे प्रति उनका प्रेम कितना महान है! जब यीशु क्रूस पर मरे, तो उनके एक तरफ लटके डाकू ने उन्हें श्राप दिया। परन्तु उस डाकू ने, जो दूसरी ओर था, उस डाकू को डांटा, जिसने यीशु को श्राप दिया था, और कहा, "हम तो न्यायानुसार दण्ड पा रहे हैं, क्योंकि हम अपने कामों का ठीक फल पा रहे हैं; पर इसने कोई अनुचित काम नहीं किया" (लूका 23:41)।

हाँ, मेरे प्रिय भाईयों और बहनों। प्रेम में, स्वयं पर वह क्रोध लेकर जिसके हम अपने पापों के कारण लायक हैं, उन्होंने हमें छुड़ाया है। यदि आपने अभी यीशु मसीह, प्रेमी परमेश्वर, को अपने व्यक्तिगत प्रभु व मुक्तिदाता के रूप में स्वीकार नहीं किया है, तो इसी क्षण अपने हृदय के द्वार खोलें और उन्हें अपने मुक्तिदाता के रूप में स्वीकार करें!